अध्याय 20. वीर बालक (एकांकी)

(घ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

बताइए, किसने कहा?

1. "सूरज चढ़ गया, अभी तक सुजान दूध लाया ही नहीं।

Ans:- → कल्याणी ने

2. "अभी दूध नहीं आया?"

Ans:- → बलकरन ने

3. "तुरक आ गया, भागो, तुरक आ गया।

Ans:- → एक हिंदू ग्रामीण ने

4. "यह भगदड़ कैसी मच रही है?"

Ans:- → कल्याणी ने

5. "बहिन चुप रहो, तुरक सुन लेगा।

Ans:- → मुसलमान ग्रामीण ने

6. "इन तस्वीरों को पलटो, इनके पीछे दीवारों में कुछ होगा।

Ans:- → मुबारक ने

7. "मैंने तुम्हें क्या हुक्म दिया था, सरदार?"

Ans:- → तैमूर ने

लघूत्तरीय प्रश्न-

1. बलकरन देखने में कैसा था? पाठ के आधार पर बताइए।

Ans:- बलकरन एक साधारण ग्रामीण बालक था, पर वह निडर, साहसी और आत्मसम्मानी था।उसकी उम्र केवल बारह वर्ष थी, फिर भी उसमें वीरता और समझदारी थी।

2. पाठ के आधार पर बताइए कि तैमूर देखने में कैसा था?

Ans:- तैमूर रोबीले चेहरे वाला, ऊँची नाक, मोटे हाथों वाला, हाथ में तलवार लिए एक भयानक और कठोर योद्धा था।

3. गाँव में भगदड़ क्यों मच गई थी?

Ans:- गाँव में भगदड़ इसलिए मच गई क्योंकि तैमूर अपनी बड़ी सेना के साथ लूट-पाट और आक्रमण करता हुआ गाँव की ओर आ रहा था।

4. गाँव में आकर तैमूर के सैनिक क्या करते थे?

Ans:- तैमूर के सैनिक घरों की तलाशी लेते, सामान तोड़ते और सोना-चाँदी लूटने की कोशिश करते थे।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न-

1. जफर और मुबारक की बातचीत का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

Ans:- जफर और मुबारक गाँव में लूट की योजना पर बात करते हैं।मुबारक सैनिकों को सोना-चाँदी ढूँढने का आदेश देता है और कहता है कि ग्रामीण अपने धन को दीवारों और तस्वीरों के पीछे छिपाते हैं।उनका उद्देश्य लोगों को मारना नहीं बल्कि धन लूटना होता है।

2. बलकरन और तैमूर की बातचीत का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

Ans:- बलकरन निर्भीक होकर तैमूर से बात करता है और अपने दूध को देने से मना कर देता है।वह चाकू से लड़ने को तैयार हो जाता है।उसकी निडरता और साहस से तैमूर प्रभावित हो जाता है और उसकी जान बख्श देता है।तैमूर बलकरन की बहादुरी की प्रशंसा करता है और गाँव को नुकसान न पहुँचाने का वचन देता है।

3. बलकरन की वर्षगाँठ किस प्रकार मनाई गई? विस्तारपूर्वक बताइए।

Ans:- बलकरन की वर्षगाँठ पर उसकी माँ कल्याणी ने उसे नहलाने, माला पहनाने और मिठाइयाँ व खीर खिलाने की योजना बनाई थी।हालाँकि तैमूर के आक्रमण से उत्सव बाधित हो गया, लेकिन बलकरन की बहादुरी के कारण न केवल उसकी जान बची बल्कि उसका गाँव भी सुरक्षित रहा।इस प्रकार उसकी वर्षगाँठ वीरता और साहस से यादगार बन गई।